अध्ययन सामग्री
बी. ए. (संस्कृत)
पार्ट 3
पेपर - षष्ठ
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज
बी. कं. सिं. वि०
(आरा)

01.07.20

अव्ययीभाव समास

सूत्र व्याख्या - 1) अव्ययीभावः

वृत्ति - अधिकारोऽयं प्राक् तत्पुरुषात्

यह अधिकार सूत्र है। शब्दार्थ है - (अव्ययीभावः) अव्ययीभाव होता है। इसका अधिकार 'तत्पुरुषः' के पूर्व सूत्रों तक है।
इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा - इस सूत्र से लेकर 'तत्पुरुषः' के पूर्वसूत्र (अन्यपदार्थे च संज्ञायाम्) तक 'अव्ययीभाव' का अधिकार है।
तात्पर्य यह है कि इस अधिकार क्षेत्र के सूत्रों द्वारा किए गये समासों को 'अव्ययीभाव' कहते हैं।
अनव्ययम् अव्ययं भवति इति अव्ययीभावः
इसमें पूर्वपद अव्यय और उत्तरपद अनव्यय होता है।
समस्त पद अव्यय हो जाता है।
इस समास में पूर्वपद अव्यय की प्रधानता होती है।

2) अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु -

सूत्र की वृत्ति है - विभक्त्यर्थादिषु वर्तमानमव्ययं सुबन्तेन सह

Scanned by CamScanner

नित्यं समस्यते | प्रायेणाऽविग्रहो नित्यसमासः, प्रायेणास्वपदविग्रहो वा | विभक्तौ – 'हरि ङि अधि' इति स्थिते – |

सूत्र का शब्दार्थ है — (विभक्ति - समीप - समृद्धि - व्यृद्धि - अर्थाभाव - अत्यय - असंप्रति - शब्दप्रादुर्भाव - पश्चाद् - यथा - आनुपूर्व्य - यौगपद्य - सादृश्य - संपत्ति - साकल्य - अन्तवचनेषु) – विभक्ति, समीप, समृद्धि, समृद्धि का नाश, अभाव, नाश, अनुचित, शब्द की अभिव्यक्ति, पश्चात्, यथा, क्रमशः, एक साथ, समानता, संपत्ति, सम्पूर्णता और अन्त अर्थ में (अव्ययम्) अव्यय – | किन्तु होता क्या है यह जानने के लिए 'प्राक्कडारात् समासः', 'सह सुपा' तथा 'अव्ययीभावः' की अनुवृत्ति करनी होगी |

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा — 1) विभक्ति 2) समीप 3) समृद्धि 4) समृद्धि का नाश 5) अभाव 6) नाश 7) अनुचित 8) शब्द की अभिव्यक्ति 9) पश्चात् 10) यथा 11) क्रमशः 12) एक साथ 13) समानता 14) संपत्ति 15) सम्पूर्णता और 16) अन्त – इन सोलह अर्थों में वर्तमान अव्यय का सुबन्त के साथ समास होता है और उस समास की अव्ययीभाव संज्ञा होती है |

'सह सुपा' के समान 'अव्ययं विभक्ति॰' इस सूत्र में 'अव्ययम्' ऐसा योगविभाग किया जाता है |

दो पद हैं — 1) अव्यय 2) विभक्ति —— वचनेषु

इन दोनों पदों को अलग - अलग (योगविभाग) करने से दो सूत्र बनेंगे — 1) अव्ययम्

2) विभक्ति —— वचनेषु |

'अव्ययम्' को पृथक् सूत्र मान लेने का फल यह है कि विभक्ति, समीप आदि अर्थ से भिन्न अर्थों में भी अव्ययीभाव समास हो सकता है | उसी की सिद्धि के लिए यह योगविभाग किया जाता है |

जैसे – दिशयोर्मध्ये अपदिशम् | यहाँ विभक्ति आदि अर्थों में से किसी अर्थ के न होने पर भी अव्ययीभाव समास हुआ है |

Scanned by CamScanner

अपदिशम् आदि प्रयोगों की सिद्धि के लिए ही योगविभाग की उपयोगिता है, इसलिए योगविभाग किया गया है।
'अव्ययम्' ऐसा योगविभाग करने पर 'अव्यय समर्थ सुबन्त के साथ समस्त हो' ऐसा अर्थ फलित होता है। उदाहरण - अपदिशम् पूर्ण सूत्र का उदाहरण है —
अधिहरि, उपकृष्णम् आदि

अधिहरि — हरि ङि॰ अधि
'अधि' अव्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ अधिकरण में वर्तमान है। अतः प्रकृत सूत्र से सुबन्त 'हरि ङि॰' के साथ उसका समास प्राप्त होता है।

3) प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् —
सूत्र की वृत्ति है — समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टमुपसर्जनसंज्ञं स्यात्।
यह संज्ञा सूत्र है। शब्दार्थ है — (समासे) समास शास्त्र में अर्थात् समास विधायक सूत्र में (प्रथमानिर्दिष्टं) प्रथमा विभक्ति से निर्दिष्ट (उपसर्जनम्) 'उपसर्जन' कहलाता है।
तात्पर्य यह है कि समास विधान करने वाले सूत्रों में प्रथमा विभक्ति से जिस पद का निर्देश किया जाता है उसे 'उपसर्जन' कहते हैं।
उदाहरण — समासविधायक सूत्र 'अव्ययं विभक्ति॰' में 'अव्ययम्' पद प्रथमान्त है, अतः वह प्रकृत सूत्र से 'उपसर्जन' संज्ञक होगा।
'हरि ङि अधि' में अलौकिक विग्रह वाक्य में 'अधि' अव्यय है। अतः प्रकृत सूत्र से 'अधि' की उपसर्जन संज्ञा होती है। उपसर्जन होने से वह समास का प्रथम अवयव होता है।
इसी प्रकार समास विधायक सूत्र 'द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः' इस में 'द्वितीया' पद का प्रथमा विभक्ति में निर्देश हुआ है। इससे 'कृष्णं श्रितः' इस लौकिक विग्रह

Scanned by CamScanner

वाक्य में 'कृष्णं' पद का बोध होता है।
अतः 'कृष्णं' को 'उपसर्जन' कहते हैं और वह समास का प्रथम अवयव होता है।

5) उपसर्जनं पूर्वम् —
सूत्र की वृत्ति है — समासे उपसर्जनं प्राक् प्रयोज्यम्।
इति 'अर्थः प्राक् प्रयोगः।
यह विधि सूत्र है।
सूत्र का शब्दार्थ है — (उपसर्जनम्) उपसर्जन (पूर्व) पूर्व या पहले होता है।
'प्राक्कडारात् समासः' का यहाँ अधिकार है।
इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा — समास में 'उपसर्जन' का प्रयोग पहले होता है।
उदाहरण के लिए — 'हरि ङि अग्नि' में 'अग्नि' उपसर्जन है, अतः प्रकृत सूत्र से उसका पहले प्रयोग होने पर 'अग्नि हरि ङि' रूप बनता है।
यहाँ प्रातिपदिक होने पर सुप् लोप होकर 'अग्नि हरि' रूप बनने पर अव्ययीभाव होने के कारण प्राप्त 'सु' का लोप होकर 'अग्निहरि' रूप सिद्ध होता है।

Scanned by CamScanner